



Hargharpanditji

॥ इंदिरा एकादशी ॥

॥ ॐ नमो नारायणाय ॥

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ इंदिरा एकादशी ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्री लक्ष्मीनारायणाय नमः॥

इंदिरा एकादशी का परिचय

भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी को इंदिरा एकादशी कहा जाता है। यह एकादशी विशेष रूप से पितरों की मुक्ति, पितृदोष की शांति तथा भगवान श्रीहरि विष्णु की कृपा प्राप्त करने के लिए अत्यंत फलदायी मानी गई है। इस व्रत का माहात्म्य भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को बताया था। ऐसा कहा गया है कि जो श्रद्धापूर्वक इस व्रत का पालन करता है, उसके पितरों को उत्तम गति प्राप्त होती है और स्वयं साधक को भी पुण्य, सुख तथा अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

कथा प्रारंभ

सतयुग में माहिष्मती नगरी में इन्द्रसेन नाम के एक धर्मात्मा, सत्यवादी और प्रजावत्सल राजा राज्य करते थे। वे भगवान श्रीविष्णु के परम भक्त थे और सदैव धर्म तथा न्याय के मार्ग पर चलते थे। उनकी प्रजा भी सुखी और समृद्ध थी।

एक दिन भगवान के परम भक्त देवर्षि नारद जी राजा इन्द्रसेन के दरबार में पधारे। राजा ने अत्यंत श्रद्धा और आदर के साथ उनका स्वागत किया तथा उनके चरणों में प्रणाम कर कुशल-क्षेम पूछा। तब देवर्षि नारद ने कह "हे राजन्! मैं अभी यमलोक से आ रहा हूँ। वहाँ मैंने आपके पिता को देखा। वे अपने पूर्व कर्मों के कारण यमलोक में निवास कर रहे हैं। उन्होंने मुझे आपके पास यह संदेश देने के लिए भेजा है कि यदि आप भाद्रपद कृष्ण पक्ष की इंदिरा एकादशी का विधिपूर्वक व्रत करके उसका पुण्य उन्हें अर्पित करेंगे,

तो उन्हें यमलोक से मुक्ति मिल जाएगी और वे दिव्य लोक को प्राप्त करेंगे।"

यह सुनकर राजा इन्द्रसेन अत्यंत व्याकुल हो गए। उन्होंने देवर्षि नारद से विनम्रतापूर्वक पूछा—

"हे देवर्षि! कृपया मुझे इस पवित्र व्रत की संपूर्ण विधि बताइए, जिससे मेरे पिता का कल्याण हो सके।"

देवर्षि नारद ने कहा—

"हे राजन्! दशमी के दिन संयम और सात्त्विक आहार ग्रहण करें। एकादशी के दिन प्रातः स्नान करके भगवान श्रीहरि विष्णु का पूजन करें, व्रत रखें, विष्णु सहस्रनाम, गीता अथवा हरिनाम का स्मरण करें और रात्रि में जागरण करें। द्वादशी के दिन ब्राह्मणों को भोजन, दान-दक्षिणा देकर व्रत का पारण करें तथा इस व्रत का समस्त पुण्य अपने पितरों को समर्पित करें।"

राजा इन्द्रसेन ने नारद जी के बताए अनुसार संपूर्ण श्रद्धा और नियमपूर्वक इंदिरा एकादशी का व्रत किया। उन्होंने भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना की, रात्रि-जागरण किया और द्वादशी के दिन विधिपूर्वक पारण करके व्रत का पुण्य अपने पिता को अर्पित कर दिया।

व्रत का फल

इंदिरा एकादशी के पुण्य प्रभाव से राजा इन्द्रसेन के पिता यमलोक के बंधनों से मुक्त हो गए। उन्हें दिव्य शरीर प्राप्त हुआ और वे विष्णुलोक (वैष्णव धाम) को चले गए। राजा इन्द्रसेन ने भी दीर्घकाल तक धर्मपूर्वक राज्य किया और अंत में भगवान श्रीहरि के परम धाम को प्राप्त हुए।

कथा का संदेश

इंदिरा एकादशी का व्रत श्रद्धा और नियमपूर्वक करने से—

पितरों को उत्तम गति और मोक्ष की प्राप्ति होती है।

पितृदोष की शांति होती है।

भगवान श्रीहरि विष्णु की विशेष कृपा प्राप्त होती है।

समस्त पापों का नाश होता है।
परिवार में सुख, शांति और समृद्धि आती है।
अंत में भगवान विष्णु के परम धाम की प्राप्ति होती है।

फलश्रुति

जो श्रद्धालु इंदिरा एकादशी का व्रत करता है, इसकी कथा का श्रद्धापूर्वक श्रवण या पाठ करता है तथा भगवान श्रीहरि विष्णु का स्मरण करता है, उसके पितरों को सद्गति प्राप्त होती है, उसके जीवन के पाप नष्ट होते हैं और उसे धर्म, अर्थ, काम तथा अंत में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

॥ इति श्री इंदिरा एकादशी व्रत कथा सम्पूर्ण ॥

